B.A. III
Paper II

लाल-काले मृद्भाण्ड
Black & Red Ware.

ये पात्र मुख्यत: चाक द्वारा निर्मित होते थे। यह चमकीले एवं गाढ़े रंग के मजबूत पात्र हैं। ये पात्र लाल मिट्टी द्वारा बनाये गये हैं और कभी-कभी उन पर हल्का लेप भी किया जाता है। मुख्यत: लाल और काले रंग के मृद्भाण्ड प्राप्त होते हैं जिनपर विभिन्न प्रकार की चित्रकारी दिखाई देती है। इन चित्राकृतियों में मुख्यत: ज्यामितिय अलंकरणों में वृत, त्रिकोण एवं चौकोर आकार प्रयोग किया गया है। वानस्पतिक चित्रण में पीपल के पत्ते विशेष उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार पशु आकृतियों में सांप मछलियाँ, हिरण तथा कुछ पक्षियों का भी अंकन है। 'सिमेश्वर' से प्राप्त एक पात्र पर दो हिरण एवं शिकारी का चित्रण है तथा लोथल से प्राप्त एक जार पर दो पक्षी प्रदर्शित हैं जो चोंच में मछली दबाये वृक्ष पर बैठी हैं। नीचे एक जानवर चित्रित है जिसे डा० एस० आर० राव ने लोमड़ी मानते हैं। इस दृश्य का चित्र का सम्बन्ध पंचतंत्र के कथानक से मानते हैं।

हड़प्पीय मृद्भाण्ड मुख्य: विभिन्न रंगों वाले, चमकदार, छिद्रित, उत्कीर्णित, मुद्रियाकार हैं। हड़प्पीय चमकीले मृद्भाण्ड सर्वाधिक पुराने जाने जाते हैं। उन पात्रों पर विभिन्न रंगों से चित्रकारी की गई है। जिनमें लाल, काले, हरे, एवं पीले रंगों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार के अलंकरण मुख्यत: हड़े और छिछले पात्रों पर ही दृष्टिगत होता है। छिद्रित पात्रों में मुख्य रूप से तले के मध्य में

Scanned with CamScanner

बड़ा छिद्र एवं पात्र के चारों ओर से छोटे-छोटे छिद्र किये गये हैं। कुछ विद्वान ऐसे पात्रों को मदिरा-बनाने में उपयोगी मानते हैं। हड़प्पीय पात्रों में कटोरे प्याले, हंडिया, सकरी ग्रीवा वाली हंडिया, बोतल की तरह लम्बा पात्र, छेदीदार बर्तन एवं अनाज नापने के पात्र भी प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त स्टैण्ड वाला पात्र भी विशेष उल्लेखनीय है। सम्भवतः ये दैनिक-जीवनउपयोगी रहे होगें एवं खाने-पीने पकाने संग्रह तथा पूजा आदि के कार्य हेतु प्रयोग किये जाते होगें।

चिमिरखेड़ा स्रोत से कुछ भिन्न-प्रकार के पात्र प्राप्त हुए हैं। यहाँ से कब्रा-समाधि के अतिरिक्त चमकाये हुए पात्र भी प्राप्त-होते हैं। इनमें जलपात्र के रूप में कटोरे, प्याले ढक्कन, गोल पात्र इत्यादि हैं। ये मृद्भाण्ड चित्रित हैं। चित्रा कृतियों के रूप में तारे, मछलियां वनस्पति, उड़ते हुए पक्षी इत्यादि उल्लेखनीय हैं। उत्तर हड़प्पीय संस्कृति के अन्तिम चरण में चमकीले लाल पात्र एवं कृष्ण लोहित मृद्भाण्ड (Black and Redware) भी प्राप्त होने लगते हैं।

इस प्रकार के पात्र राजस्थान के स्रोत से भी प्राप्त हुए हैं। आहाड़ नामक पुरास्थल से ये अधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं। इन पात्रों को अग्नि में डालकर पकाये जाने की विशिष्ट पद्धति है। कायथा में ये नीचली सतह से भी प्राप्त-होते हैं एवं इनकी तिथि पुरानी मानी गयी है। अनुमानतः इन पात्रों के प्रयोग करने वाले

Scanned with CamScanner

आहाड़ निवासी यहाँ आए तथा 200 वर्षों के आस-पास से लगभग 2 वर्षों तक इस स्थल पर रहे होंगे। इस प्रकार मनोटी एव आवरा से भी यह संस्कृति निम्न स्तरों से मिलती है। संभवतः इस क्षेत्र में भी आहाड़ से ही यह परम्परा यहाँ आयी। नावदाटोली से भी मृद्भाण्ड मुख्यतः क्रीम एव स्लेटी के रूप में प्रारंभिक काल से प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार के पात्र मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं जिसे मालवा मृद्भाण्ड कहा गया है। यह लाल रंग के पात्रों पर काले रंग से चित्रण किया है।